(1)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पाँच
मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता) (G.T.)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

श्री योगेश्वर झाक 'नोर' खण्डकाव्य :-

ई खण्डकाव्य कोशी नदीक विनाशकारी लीलापर आधारित एक विचारोत्तेजक रचना थिक। ई 7 भागमे बाँटल गेल अछि जकरा प्रत्येक 'पर्व' कहल गेल अछि। मिथिलाक पूर्वोत्तर भागमे कोशीक प्रकोपक कारण लोकपर जे जान आ विपत्तिक पहाड़ टूटैत छैक तकर ई प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत करैत अछि। एकर शीर्षक लोककेँ आँखिक नोरक प्रतीक थिक जकर कारण अछि नदीक हिंसक उत्पात। एकर विकासक भौगोलिक आ भौगोलिक आधारक निर्देश करैत कवि विस्तारसँ नदीक क्षमता आ प्रतापपर दृष्टिपात कयलनि अछि आ कौशिकीकेँ खाली गंगा आ सिन्धुक बाद स्थान देलनि अछि। ई जीवन आ धन-सम्पत्तिक महान क्षतिक त्रियात्मक सर्वेक्षण करैछ जाहिसँ लोकक हृदय द्रवित भऽ जाइत अछि। नोर स्वरूपमे

आँचलिक अछि। मुदा एहिमे स्वाभाविक संवेदना निहित अछि। शब्दचित्रमे कविक संवेदना प्रकट अछि। कोशी बाँध एक नाटकीय मोड़ छिक। कोशी लोकक पीड़ाक समाधानक हेतु ई एक सफल उपाय छिक। पूर्वस्थितिक अन्धकार आ हताशाक प्रति एक तीव्र वैषम्यक रूपमे कोशी बाँध एक नव युगक आरम्भ करैछ आ लोक सुखचैनक साँस लैत अछि। एहि तरहेँ उत्तर बिहारक शोक रूपमे चिन्हित कोशीक धारक आघातसँ पीड़ित लोकक बाढ़ एक हृदयस्पर्शी संस्मरण छिक। कवि जनक गहिंरदहमे उतरि सकलाह अछि तहिसँ बेसी मर्मक पहुँचब कठिन छिक। शीर्षक अनुसार – बाढ़ भावात्मक रूपकाव्य छिक। एहिमे कोशीक भयंकर बाढ़िक विभीषिका एवं तटवर्ती प्रान्तक विनाश-लीलाक रूप भेल अछि। हिनक रचना-शैली एवं वर्णन-प्रणालीक सबल विशेषता निम्नलिखित पंक्तिमे नीक जकाँ सूचित भए जाइत अछि:-

"विध्वंस विनाशक लीलामे
प्रकृतिक प्रधान तोँ धात्रि छली
देखितहि तोहर दुर्दम्य नाचल
धेमुरा तिलयुगा सुरसर बलानमे

कमला जीवछ गेली पड़ाए
मर्यादा कुल कगार छाड़ि
आस्तित्व गमकौलक पुष्करिणी,
सुन्दर सरवर पोखरि इनार ।"

संदर्भ :- मै० साहित्य क इतिहास - दुर्गानाथ झा 'श्रीश' पृ०-246

Samrit Kumar
21/07/20